21 वी सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजनैतिक विचारों की प्रासंगिकता

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकायान्तर्गत राजनीति विज्ञान विषय में विद्यावाचस्पति (पीएच. डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत

∘ शोध प्रारूप ∘

शोध निर्देशक

डॉ. लाल कृष्ण शर्मा

शोधार्थी

जीवन दान

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविधालय,

जयपुर (राज.), भारत

2022

विषय-सूची

क.स.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	शीर्षक	1
2.	शोध प्रस्तावना	1-6
3.	शोध कार्य का महत्व एवम प्रासंगिकता	7-8
4.	प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य	9-10
5.	शोध परिकल्पना	10-12
6.	शोध-प्रविधि	12-13
7.	उपलब्ध साहित्य की समीक्षा/पुनरावलोकन	13-17
8.	शोध कार्य की प्रस्तावित अध्याय योजना	17-18
9.	संदर्भ ग्रंथ सूची	19-21

- ## शीर्षक -

21वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता ।

- ## शोध प्रस्तावना -:

प्राचीन भारत में कौटिल्य से पूर्व भी कई राजनीतिक विचारक हुए थे जिनमें आचार्य मनु , शुक्राचार्य इत्यादि जिन्होंने राज व्यवस्था संबंधी अपने विचार दिए थे परंतु कौटिल्य सैद्धांतिक होने के साथ-साथ व्यावहारिक राजनीतिज्ञ भी था । कौटिल्य के नेतृत्व व निर्देशन में प्रथम बार भारत का एक राष्ट्र के रूप में राजनीतिक एकीकरण हुआ तथा वर्तमान समय तक उनके राजनीतिक विचार भारत राष्ट्र हेतु अधिकांश पहलुओं के संदर्भ में ज्यादा प्रासंगिक सिद्ध हुए है।

कौटिल्य का जीवन व उनका व्यक्तित्व वर्तमान में भारतीय लोगों के लिए प्रेरणास्पद है । उसी प्रकार कौटिल्य की कृतियां अर्थशास्त्र , लघु चाणक्य , वृद्ध चाणक्य , चाणक्य नीतिशास्त्र व चाणक्य सूत्र आदि राजनीति के विद्वानों के लिए पथ प्रदर्शक है यहां तक कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू भी श्रेष्ठ राजनीति के रूप में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों व उनकी कृति अर्थशास्त्र से प्रभावित रहे ।

वर्तमान भारतीय राजनीति स्वरूप में जातिवाद , धर्म , भ्रष्टाचार , वंशवाद सहित पहचान की राजनीति आदि तत्वों की जड़ें गहरी हो चुकी है । कौटिल्य राजनीति में किसी भी प्रकार के जातिवाद , धार्मिक अंधविश्वास , आतंकवाद , भ्रष्टाचार आदि तत्वों का अत्यधिक विरोधी था और वह केवल प्रजा व राज्य के हित्तो को ही सर्वोपरि मानता था हालांकि वर्तमान भारतीय राजनीति में महिला राजनेताओं जेसे स्वर्गीय इंदिरा गांधी , प्रतिभा पाटिल , स्वर्गीय जयललिता , वसुंधरा राजे , ममता बनर्जी , मायावती इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर भारत में नारी सशक्तिकरण को बल दिया ।

21वी सदी के प्रथम दशक में विशेषकर मनमोहन सरकार (2004- 2014) में भ्रष्टाचार का मुद्दा छाया रहा जिसके संदर्भ में अन्ना हजारे जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं ने आंदोलन कर भारतीय राजनीतिक को एक नवीन दिशा दी । कश्मीर उलझन के कारण भारत निरंतर आतंकवाद से ग्रसित रहा है वर्तमान में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीजेपी की सरकार ने कश्मीर से धारा 370 और 35-A हटाकर पुनः कश्मीर को भारत से जोड़कर ' एक विधान एक निशान ' के नारे को साकार किया है ।

कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र राजनीतिक प्रशासन सहित आर्थिक प्रशासन को भी महत्व प्रदान कर वर्तमान में स्वयं को राजनीतिक आर्थिक युग (साध्य / साधन) में प्रासंगिक सिद्ध करता है । कौटिल्य की राजव्यवस्था में राजा का चुनाव व उसको पद से हटाने का अधिकार प्रजा को प्राप्त है हालांकि यह अधिकार केवल विशेष परिस्थितियों में ही प्रजा को प्राप्त था ठीक उसी प्रकार वर्तमान भारतीय लोकतंत्र में भी इस प्रकार के अधिकार जनता को प्राप्त है जैसे निर्वाचन व्यवस्था इत्यादि

के द्वारा अपने प्रतिनिधियों को चुनना लेकिन उनको एक निश्चित समय से पूर्व पद से नहीं हटा सकते है । कौटिल्य ने मानव इतिहास में प्रथम बार राष्ट्र जेसी अवधारणा पर विचार करके विभिन्न राज्यों को मिलाकर आर्यावर्त राष्ट्र का सर्जन किया जो कि वर्तमान भारत हेतू आधारशिला है । भारतीय राजनीति के जनक कौटिल्य ने 2300 वर्ष पूर्व ही पंथ-निरपेक्ष राज्य की नींव रख दी थी इसीलिए वर्तमान पंथनिरपेक्ष भारत आज उनके प्रति कृतज्ञ है कौटिल्य स्वतंत्र यथार्थवादी राजनीतिक चिंतक थे जिन्होंने स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू जैसे आदर्शवादी भावुक प्रधानमंत्री के राजनीतिक चिंतन एवं विदेश नीति को भी प्रभावित किया लेकिन नेहरू चीन पाकिस्तान व कश्मीर मुद्दे पर राष्ट्रवादी हित उठाने में असफल रहे ।

वर्तमान मैं नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकार कौटिल्य के विचारों के अनुरूप इन समस्याओं को हल कर रही है कश्मीर से धारा 370 व 35-A को हटाकर वहाँ परिवारवाद पर प्रहार किया है तथा संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांधा है । भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर कौटिल्य से सीख लेने को कहते हैं ।

आजादी के बाद से लेकर 21 वीं सदी के 2 दशकों तक भारत के वार्षिक आय बजट में आर्थिक नीतियों के संदर्भ में वित्त मंत्रियों द्वारा निरंतर कौटिल्य का मार्गदर्शन लेते हुए देखा गया है । कौटिल्य के आदर्श राजा के व्यक्तित्व से साम्यता रखने वाले कई राजनेता जैसे लाल बहादुर शास्त्री , अटल बिहारी वाजपेई , नरेंद्र मोदी आदि भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजर्षीराजा का पुनः पुनः स्मरण कराते हैं । अनेक राज्यों के मुख्यमंत्रियों जिनमें योगी आदित्यनाथ , अशोक गहलोत , नीतीश कुमार इत्यादि को भी कौटिल्य जैसी चतुरता से युक्त बताया जाता है । कौटिल्य ने राज्य के राजा हेतु वेदों , उपनिषदों सहित अन्य ज्ञान से परिपूर्ण व शिक्षित होना आवश्यक बताया । 2300 वर्ष पूर्व कौटिल्य ने जिस प्रकार यूनानी सम्राट सिकंदर जैसी विदेशी आक्रांताओं को पराजित करने हेतु तथा पाटलिपुत्र के अहंकारी भ्रष्ट राजा को सत्ता से हटाने के लिए चंद्रगुप्त मौर्य व अन्य छात्र जो तक्षशिला विश्वविद्यालय से संबंधित थे उनकी मदद कर उनको राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाया वही पाठ आज फिर विश्वविद्यालय में सक्रिय छात्र नेताओं को पढ़ाने की जरूरत है ।

कौटिल्य की युद्ध नीति साम , दाम , दंड व भेद पर आधारित थी कौटिल्य ने विदेश नीति के तहत मंडल सिद्धांत तथा षडगुण नीति को अपनाने को कहा हालांकि कौटिल्य युद्ध को अंतिम विकल्प मानता था वह स्वयं आदर्शवादी ना होकर वर्तमान समय के अनुरूप यथार्थवादी था। कौटिल्य के भेद उपाय के अंतर्गत 'फूट डालो और राज करो' की नीति से ब्रिटेन जैसे छोटे से देश ने लगभग तीन चौथाई विश्व पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया था इसी प्रकार कौटिल्य का राज्य मंडल सिद्धांत वर्तमान भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पड़ोसी राष्ट्र विशेषत: पाकिस्तान , अफगानिस्तान , चीन जैसे देशों से विदेश नीति में प्रासंगिक है वर्तमान में अमेरिका रूस चीन जैसे विशाल राष्ट्र इस नीति पर चल रहे है ।

- **शोध कार्य का महत्व व प्रासंगिकता -:**

प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारक कौटिल्य जिसे भारतीय राजनीति का जनक कहा जाता है तथा जिसे भारत का मैक्यावली भी कहा जाता है । कौटिल्य ने अपने जो राजनीतिक विचार या राज व्यवस्था संबंधी विचार दिए वह आज 21वीं सदी के पूर्वार्ध में उतने ही प्रासंगिक है ।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अपने शोध विषय 21वीं सदी के पूर्वार्ध में भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता से वर्तमान संदर्भ में उन विचारों को सरकार द्वारा नीतियों में शामिल कर सुशासन को स्थापित किया जाएगा ।

कौटिल्य के शासन संबंधी अपने विचारों को साधन बनाकर राजनीतिक , आर्थिक , सामाजिक क्षेत्र में वर्तमान समय में भी क्रियान्वित किया जा सकता है । एक सफल राजा की आवश्यकता पर कौटिल्य के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना भी प्रस्तावित शोध का महत्वपूर्ण कार्य है।

कौटिल्य पर पूर्व में भी शोध कार्य हुए हैं लेकिन भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता व्यक्तियों के लिए शोध के क्षेत्र में नवीन दिशाएं खोलने में सहायक होगा ऐसी आशा की जाती है । वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कौटिल्य की नीतियां महत्वपूर्ण बन गई और इसके माध्यम से साधारण जनता को वर्तमान शासन व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया गया है । विदेश नीति पर कौटिल्य के विचारों पर नवीन तथ्यों को जानना प्रस्तावित यह शोध की आवश्यकता को उजागर करता है । आशा है कि यह अध्ययन राजनीति विज्ञान के उन सभी शोधार्थियो का मार्ग प्रशस्त करेगा जो समसामयिक भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना चाहते हैं ।

• प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य -:

किसी भी शोध कार्य का उद्देश्य उसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित करना होता है । प्रस्तावित शोध में कौटिल्य के जीवन व उनके विचारों तथा योगदान की गवेषना के पीछे निम्नलिखित उद्देश्य निहित है ।

1. कौटिल्य के समय की राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक तथा धार्मिक स्थिति का अध्ययन करना ।

2. कौटिल्य के परराष्ट्र संबंधी विचारों को वर्तमान विदेश नीति से तुलना कर उनकी विवेचना करना ।

3. वर्तमान भारतीय राजनीति के स्वरूप को समझना तथा कौटिल्य के विचारों को उनमें समाहित करना ।

4. कौटिल्य के राजार्षि संबंधी विचारों को समसामयिक सरकारों के प्रमुखों से तुलना करना ।

5. कौटिल्य के भ्रष्टाचार संबंधी विचारों का वर्तमान संदर्भ में अध्ययन करना ।

6. कौटिल्य के धर्म संबंधी विचारों का वर्तमान भारत के धर्मनिरपेक्षता संबंधी विचारों से विवेचना करना ।

- **शोध परिकल्पना -:**

परिकल्पना किसी भी वैज्ञानिक शोध का महत्वपूर्ण अंश होती है इसके बिना शोध कार्य की दिशा निश्चित नहीं होती है। परिकल्पना शोध का एक आवश्यक घटक है जिसके बिना शोध का आधार सुनिश्चित नहीं किया जा सकता ।

प्रस्तावित शोध का विषय ‘’ 21वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राजनीति में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता '' है ।

अतः निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर शोध परिकल्पना की है ।

- समसामयिक भारतीय राजनीति में कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता की जांच की जाएगी ।

- कौटिल्य के जीवन संबंधी परिस्थितियों तथा और समय के प्राचीन भारतीय व्यवस्था (सामाजिक , राजनीति) के वातावरण को जानने का प्रयास किया जाएगा ।

- कौटिल्य की कृतियो का तथा उनके विषयवस्तु का अध्ययन किया जाएगा ।

- कौटिल्य के विचारों में राज्य व्यवस्था तथा राजार्षि संबंधी उनके विचारों का अध्ययन किया जाएगा ।

- कौटिल्य की पर राष्ट्र संबंधी नीति को वर्तमान विदेश नीति से तुलनात्मक अध्ययन कर महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला जाएगा ।

- कौटिल्य के प्राचीन धर्मनिरपेक्षता व सुशासन संबंधी विचारों का वर्तमान संदर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन करना ।

• शोध प्रविधि -:

प्रस्तावित शोध में ऐतिहासिक शोध का प्रयोग किया जाएगा जो कि ऐतिहासिक व विकासात्मक अध्ययन से संबंधित है जिसमें विभिन्न कारकों के मध्य संबंधों की व्यवस्था एवं उनके मध्य गव्यात्मक क्रिया का प्रसंग कर विवेचन किया जाएगा ।

शोधकार्य में कौटिल्य के राजनीतिक विचारों एवम समसामयिक व्यवस्था हेतु द्वितीय सामग्री प्रयोग में लाई जाएगी , जो निम्नलिखित हैं -:

1. पुस्तकें

2. लेख

3. पत्र-पत्रिकाएं

4. पांडुलिपिया

5. पूर्व में हुए शोध अध्ययन आदि

- **उपलब्ध साहित्य की समीक्षा/पुनरावलोकन -:**

1. गाबा, ओ. पी. "राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा" मयूर पेपरबैक्स नवीनतम संस्करण , 2017

“राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा पुस्तक के अंतर्गत प्राचीन भारतीय , यूनानी व रोमन चिंतन से लेकर समकालीन राजनीति चिंतन तक की मुख्य-मुख्य परवर्तियो पर प्रकाश डाला गया है ।

विषय के विवेचन में तुलनात्मक व आलोचनात्मक दृष्टिकोण को प्रधानता दी गई है इसमें किसी विशेष विचारधारा को प्रमुखता नहीं दी गई है।“

2. जैन , डॉ. पुखराज “प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक” साहित्य भवन पब्लिकेशन: आगरा , 2019।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन और आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतकों के विचारों की संक्षिप्त विवेचना करने का प्रयत्न किया गया है । अनेक पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा इस धारणा का प्रतिपादन किया गया है कि प्राचीन काल में भारतीयों की दृष्टि अध्यात्मवाद पर केंद्रित थी और भारतीय दर्शन में भारतीय चिंतन का अभाव था मैक्समूलर व डनिंग द्वारा प्रतिपादित यह विचार एक भ्रांति मात्र है । वस्तुस्थिति यह है कि भारत में राजनीतिक चिंतन की अपनी परंपरा रही है जो पश्चिमी राजदर्शन की तुलना में निश्चित रूप से अधिक प्राचीन समृद्ध व सुव्यवस्थित है ।

3. प्रसाद , डॉ. मणिशंकर “कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार” मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 1998 ।

भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में कौटिल्य ऐसा नाम है जिसके व्यक्तित्व और कृतित्व में विलक्षणता है कौटिल्य की रचना अर्थशास्त्र कई संदर्भ में दुरूह होते हुए भी अर्थव्यवस्था , सामाजिक व्यवस्था , न्याय व्यवस्था , प्रशासन और राजनीति पर लिखी गई एक उत्कृष्ट करती है ।

4. शैलेंद्र सेगर “राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांत” नई दिल्ली एंटलाटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर , 2008 ।

यद्यपि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है परंतु राजनीति हमारे जीवन का अपरिहार्य अंग है ।

सामान्यता राजनीति शब्द का अभिप्राय उस कौशल से है जिसके द्‌वारा शासन कार्य अर्थात सरकारी नीतियां को लक्ष्य विशेष की ओर संचालित किया जाता है दूसरे शब्दों में शासन-संचालन की सामान्य प्रक्रिया को ही राजनीति का क्षेत्र समझा जाता है ।

5. दीपांकर , आचार्य “कौटिल्य कालीन भारत” हिंदी संस्थान लखनऊ , उत्तर प्रदेश , 1989 ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने दृष्टिकोण से मानव सभ्यता के विकास का सिंहावलोकन करते हुए कौटिल्य कालीन भारत के समाज का एक सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। इससे तत्कालीन राजनीति एवम अर्थव्यवस्था का आभास मिलता है तथा आचार्य चाणक्य अथवा कौटिल्य के महान व्यक्तित्व का पता चलता है ।

6. केला , भगवानदास “कौटिल्य की शासन पद्‌धति” हिंदी साहित्य सम्मेलन , प्रयागराज , यूपी 1948 ।

इस पुस्तक में भारतवर्ष के प्राचीन राजतंत्र का विवेचन है और राजतंत्र का आजकल प्राय विशेष विरोध हो रहा है । कुछ लोगों का विचार है कि संसार से इसका लोप हो जाएगा । इसमें संदेह नहीं कि यदि इसके दोष दूर न किए गए तो इसका भविष्य अंधकार में है इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि इसमें यथेष्ट सुधार किया जाए । राजतंत्र को एक ऐसा वेध स्वरूप दिया जाए कि इसमें निरंकुशता , स्वेच्छाचारी और प्रजापीड़न ना रहे और यह लोक हितैषी और जनसेवी हो जाए ।

- **शोध कार्य की प्रस्तावित अध्याय-योजना -:**

  - **परिचय** –

  - **प्रथम अध्याय –**

प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार विशेषता कौटिल्य के संदर्भ में

- **द्वितीय अध्याय –**

  21वी सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय राजनीति का स्वरूप।

- **तृतीय अध्याय -**

  कौटिल्य के राजनीतिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता ।

- **चतुर्थ अध्याय -**

  कौटिल्य के परराष्ट्र संबंधी विचार एवं उनकी वर्तमान में प्रासंगिकता ।

- **पंचम अध्याय -**

  कौटिल्य के पंथनिरपेक्षता व भ्रष्टाचार संबंधी विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता ।

- **निष्कर्ष -**

• संदर्भ ग्रंथ सूची -:

1. ऋग्वेद - स्वाध्याय मंडल , किल्ला पारडी (वलसाड) , गुजरात।
2. काणे , पी. वी. (1988) हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र पुणे भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट ।
3. कांगले आर. पी. (1988) दी कॉटिल्या अर्थशास्त्र (तृतीय खंड), नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास ।
4. अग्रवाल , कमलेश (2001) कौटिल्य अर्थशास्त्र एवं शुक्रनीति की राजव्यवस्थाएं नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन, दरियागंज ।
5. अवस्थी डॉ. ए एवं अवस्थी आर. के. (1993) भारतीय राजनीति चिंतन जयपुर, रिसर्च पब्लिकेशन ।
6. अलतेकर, अनंत सदाशिव (2001) प्राचीन भारतीय शासन पद्धति वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
7. आचार्य दीपांकर (1989) कौटिल्य कालीन भारत, लखनऊ उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ।
8. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद (2004) उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-7 जोधपुर, राजस्थान ग्रंथागार ।
9. कुमार, अशोक राजनीति विज्ञान आगरा, उपकार प्रकाशन ।
10. गाबा, ओम प्रकाश (2004) राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा: नोएडा, मयूर पेपरबैक्स ।
11. गाबा, ओम प्रकाश (2005) राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा: नोएडा, मयूर पेपरबैक्स ।

12. गाबा, ओमप्रकाश , (2006) पाश्चात्य राजनीतिक विचारक नोएडा, मयूर पेपरबैक्स।

13. कुमार, उमेश (1990) कॉटिल्यास ऑन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली, नेशनल बुक ऑर्गेनाइजेशन पब्लिशर्स ।

14. केला, भगवान दास (1993) कौटिल्य के आर्थिक विचार, वृंदावन, भारतीय ग्रंथमाला ।

15. गुप्त, जमनालाल व केला, भगवान दास (1947) कौटिल्य के आर्थिक विचार, प्रयागराज, भारतीय ग्रंथमाला ।

16. गैरोला, वाचस्पति (2000) कौटिल्य अर्थशास्त्र: वाराणसी चौखंबा विद्याभवन ।

17. जैन, डॉ. पुखराज (2010) राजनीति विज्ञान के मूल आधार: आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन ।

18. जैन, डॉ. पुखराज (2010) भारतीय राजनीतिक विचारक: आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन ।

19. जायसवाल, काशी प्रसाद (विक्रम संवत 2011) “ हिंदू राजतंत्र: ” काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

20. डॉ धर्मवीर (1966) “ कौटिल्य का सामाजिक वेर ” दिल्ली, संगीता प्रकाशन, शाहदरा

21. नारायणी, प्रकाश नारायण (2003) आधुनिक काल के राजनीतिक विचारक: जयपुर, प्वाइंटर पब्लिशर्स ।

22. निरंजन, हरिओम शरण (2009) कौटिल्य अर्थशास्त्र (आधुनिक राजनीति में प्रासंगिकता) ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली ।

23. प्रकाश, ओम (2010) प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास: नई दिल्ली, विश्व प्रकाशन ।

24. मिश्र, अनिल कुमार (2014) कौटिल्य अर्थशास्त्र: नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन ।

25. मेहता, वी. आर. (1992) फाउंडेशन ऑफ़ इण्डियन पॉलिटिक्स थॉट : नई दिल्ली मनोहर पब्लिकेशन ।

- **पत्र-पत्रिकाएं -:**

1. आउट-लुक
2. प्रतियोगिता दर्पण
3. राजस्थान पत्रिका
4. दैनिक भास्कर
5. शोध-पत्रिका (इतिहास शोध पत्रिका)